है। इसलिए श्रीभगवान् कहते हैं कि अनन्य भक्त के लिए वे सुलभ हैं। भक्त भगवान् के किसी भी दिव्य विग्रह की सेवा कर सकता है; अन्य योगों का अभ्यास करने वालों के आगे आने वाले व्यवधान उसके मार्ग में कभी नहीं आते। भक्तियोग बड़ा सुगम, शुद्ध एवं सुखसाध्य है। **हरे कृष्ण** मन्त्र के कीर्तन द्वारा इसका प्रारम्भ किया जा सकता है। श्रीकृष्ण अपने सेवकों के लिए कृपा से ओतप्रोत, अति द्रवितहृदय हैं। इसलिए वे पूर्ण शरणागत भक्त की सब प्रकार से सहायता करते हैं और वह उनके तत्त्व को जान जाता है। ऐसे भक्त को भगवान् वह पर्याप्त बुद्धि देते हैं, जिससे अन्त में वह भगवद्धाम में उन्हें प्राप्त कर ले।

शुद्ध भक्त की यह एक विशेष योग्यता है कि वह देश-काल का विचार किए बिना सदा श्रीकृष्ण का चिन्तन करता रहता है। उसकी भगवत्स्मृति में कभी अन्तर नहीं आता। वह किसी भी देश-काल में भगवत्सेवा कर सकता है। कुछ व्यक्तियों का कहना है कि भक्त को वृन्दावन आदि तीर्थों अथवा प्रभु-वासस्थलों में ही निवास करना चाहिए। परन्तु शुद्धभक्त तो जहाँ भी रहेगा, वहीं उसके भक्तियोग के प्रताप से वृन्दावन प्रकट हो जायगा। इसी कारण श्रीअद्वैताचार्य ने श्रीमन्महाप्रभु चैतन्यदेव से निवेदन किया था, 'प्रभो! जहाँ आपका निवास है, वहीं वृन्दावन धाम है।'

शुद्ध भक्त श्रीकृष्ण के अभिराम स्मरण-ध्यान में अविराम तन्मय रहता है। यही वे सद्गुण हैं जिनके कारण शुद्ध भक्त के लिए कृष्ण अति सुलभ हैं। भक्तियोग के पथ को गीता में अन्य सभी पथों से उत्तम कहा गया है। भक्तियोगी सामान्यतः शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य, एवं माधुर्य—इन पाँच रसों में निष्ठ होते हैं। इनमें से किसी भी रस में निष्ठ शुद्ध भक्त निरन्तर भगवत्सेवा के परायण रहता है। वह क्षणभर को भी अपने प्रियतम श्रीभगवान् को नहीं भूल सकता। इसी से उसके लिए श्रीभगवान् अति सुलभ हैं। श्री श्यामसुन्दर की क्षणमात्र की विस्मृति भी शुद्ध भक्त के लिए असह्य है। इसी प्रकार भगवान् भी अपने शुद्ध भक्त को क्षणभर के लिए भी नहीं भुला सकते। **हरे कृष्ण** महामन्त्र का संकीर्तन करने की कृष्णभावना पद्धति का यह महान् वरदान है।

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।।१५।।

माम्=मुझ को; **उपेत्य**=प्राप्त होकर; **पुनः**=फिर; **जन्म**=जन्म को; **दुःखालयम्**=दुःखों से पूर्ण; **अशाश्वतम्**=अनित्य; **न**=नहीं; **आप्नुवन्ति**=प्राप्त होते; **महात्मानः**=महात्माजन; **संसिद्धिम्**=पूर्णता को; **परमाम्**=अन्तिम; **गताः**=प्राप्त हुए।

अनुवाद

मुझ को प्राप्त हुए भक्तियोगी महात्माजनों का इस दुःखों से भरे अनित्य जगत् में फिर जन्म नहीं होता, क्योंकि वे परम संसिद्धि को प्राप्त हो जाते हैं।।१५।।

तात्पर्य

यह अनित्य प्राकृत-जगत् जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधिरूप दुःखों से पूर्ण है।